3. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ है,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

संदर्भ–

प्रस्तुत उद्धरण राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'मनुष्यता 'कविता से अवतरित है।

प्रसंग–

प्रस्तुत कविता में कवि परोपकार के लिए जीने वाले व्यक्ति को ही मनुष्य बताते हुए मनुष्यता और परोपकार को पर्याय बताता है।

भावार्थ–

कवि कहता है कि कभी भूलकर भी अपने थोड़े से धन के अहंकार में अंधे होकर स्वयं को सनाथ अर्थात् सक्षम मानकर अपने गर्व मत करो क्योंकि अनाथ तो कोई नहीं है।इस संसार का स्वामी ईश्वर तो सबके साथ है और ईश्वर तो बहुत दयालु ,दीनों और असहायों का सहारा है और उनके हाथ बहुत विशाल है अर्थात् वह सबकी सहायता करने में सक्षम है।प्रभु के रहते भी जो व्याकुल रहता है वह बहुत ही भाग्यहीन है।सच्चा मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है।

शिल्प सौंदर्य–

- 'दयालु दीनबंधु'में अनुप्रास अलंकार है।
- सरल बोधगम्य खड़ी बोली है।
- गुण प्रसाद है।

4 चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति,विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हां,बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

संदर्भ–

प्रस्तुत उद्धरण राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'मनुष्यता 'कविता से अवतरित है।

प्रसंग–

प्रस्तुत कविता में कवि परोपकार के लिए जीने वाले व्यक्ति को ही मनुष्य बताते हुए मनुष्यता और परोपकार को पर्याय बताता है।

भावार्थ–

कवि कहता है कि अपने इच्छित मार्ग पर प्रसन्नतापूर्वक हंसते खेलते चलो और रास्ते पर जो कठिनाई या बाधा पड़े उन्हें ढकेलते हुए आगे बढ़ जाओ।परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा आपसी सामंजस्य न घटे और हमारे बीच भेदभाव न बढ़े।हम तर्क रहित होकर एक मार्ग पर सावधानीपूर्वक चलें।एक दूसरे को तारते हुए अर्थात् उद्धार करते हुए आगे बढ़े तभी हमारी समर्थता सिद्ध होगी अर्थात् हम तभी समर्थ माने जाएंगे जब हम केवल अपनी ही नहीं समस्त समाज की भी उन्नति करेंगे।सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए मरता है।

शिल्प सौंदर्य–

- 'विपत्ति विघ्न' में अनुप्रास अलंकार है।
- 'हंसते खेलते हुए काम करना' जैसे मुहावरे का सटीक प्रयोग हुआ है।
- परिमार्जित खड़ी बोली है।
- गुण प्रसाद है।